श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

Answer Sheet
March - 2025

ऐनरोलमेन्ट नंबर 10 शहर _____

विद्यार्थी का नाम _____

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	अपकार
(२)	सादि
(३)	मोह
(४)	मार्ग
(५)	पोलोस
(६)	आत्मबल
(७)	मीठा
(८)	पाप
(९)	किंमत
(१०)	नवकार
(११)	गौण
(१२)	स्त्रीलिंग
(१३)	अनाहारी
(१४)	हीरसूरिश्वरजी
(१५)	भूत
(१६)	अचित
(१७)	वैराग्य
(१८)	मोक्ष
(१९)	जिनेश्वर
(२०)	अवलेही

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	अजिन सिद्ध
(२)	कर्म निर्जरा
(३)	वायुकाय
(४)	गोदोहिक
(५)	पच्चक्खाण
(६)	करंब
(७)	सर्वविरती
(८)	श्रावस्ती
(९)	श्रुतसागर
(१०)	संभवनाथ
(११)	वसुमति
(१२)	योगीराज आनंदघनजी
(१३)	व्यासना
(१४)	स्वादिम
(१५)	सूर्य और चंद्र

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	पुद्गल
(२)	सागर
(३)	घी
(४)	जानता है

(५)	लोभ
(६)	जीवो की
(७)	मात्र
(८)	चौरासी
(९)	स्पर्श
(१०)	भाव से
(११)	अनेक
(१२)	तीर्थ
(१३)	प्रत्येक
(१४)	अनंत
(१५)	वचन
(१६)	अनागत
(१७)	निश्चल
(१८)	स्त्री
(१९)	- - - -
(२०)	मन मे

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	8	(६)	1
(२)	6	(७)	5
(३)	7	(८)	4
(४)	3	(९)	9
(५)	10	(१०)	2

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	8
(२)	20
(३)	6
(४)	84
(५)	45/4
(६)	98·98
(७)	67
(८)	30
(९)	14
(१०)	4

प्रश्न-६ ✓ या ×

(१)	✓
(२)	✓
(३)	×
(४)	×
(५)	×
(६)	✓
(७)	×
(८)	✓
(९)	✓
(१०)	×

प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

(१)	17
(२)	7
(३)	13
(४)	
(५)	9
(६)	27
(७)	10
(८)	15
(९)	20
(१०)	11

	+		+		+		+		+		+		+		=	
प्रश्न-१ मिले हुए गुण		प्रश्न-२ मिले हुए गुण		प्रश्न-३ मिले हुए गुण		प्रश्न-४ मिले हुए गुण		प्रश्न-५ मिले हुए गुण		प्रश्न-६ मिले हुए गुण		प्रश्न-७ मिले हुए गुण		प्रश्न-८ मिले हुए गुण		कुल गुण	

रीमार्क _____ जांचनेवाले की सही _____

प्रश्न - ८

१. जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, बंध, निर्जरा, मोक्ष इन नव तत्व को जीव जब जानता और समझता है तब संपूर्ण विश्व के स्वरूप की और मोक्षमार्ग की यथार्थ जानकारी उसे प्राप्त होती है। तब उसे अन्य कहीं भी जाने की जरूरत लगती नहीं। ज्ञान का अखूट खजाना उसे यहीं मिल जाता है।

२. एक पढने मे होशीयार विद्यार्थी था। उसका स्वप्न डॉक्टर बनने का था। जिसके लिए उसने संकल्प किया था कि वो बारहवीं मे ९८%. मार्क्स लाना है। इसके लिए उसने सारे रस जैसे खाना पीना, घुमना फिरना, सिनेमा नाटक, विडियो, टी.वी, क्रिकेट सब का त्याग किया था। बाते करने की क्रिया चालू हो तो भी लक्ष्य सिर्फ परिक्षा में ९८%. लाना है। जो बात बाह्य जीवन के लिए है वही बात अभ्यंतर जीवन के लिए भी है। उसे बस एक धून थी पढाई पढाई। यह परिचय था लक्ष लक्ष्य विद्यार्थी का।

३. जब प्रभू कौसंबी आये, वहाँ प्रभू ने अभिग्रह किया की द्रव्य से सूप के कोने में रहे हुए उड़द के बाकुले, क्षेत्र से, वहोराने वाले का एक पैर देहलिज के अंदर और एक पैर बाहर हो, काल से सब भिक्षाचर भिक्षा लेकर निवृत्त हुए हो तब भाव से वहोराने वाली राज कुमारी हो, दासीपने को प्राप्त हो, उसका मस्तक मुंडित हो, पैरों मे बेड़ी हो, रुदन करती हो और अट्ठम तपवाली हो, ऐसी कुंआरी स्त्री वहोरावे तभी वहोरावुं अन्यथा उपवास रहेंगे।

४. गुरु अब्भुट्ठाणेणं - पच्चक्खाण लेकर आहार के लिए बैठे फिर गुरु भगवंत आचार्य, उपाध्याय, साधू आवे तो उनका विनय रखने के लिए दोनों पैर ठाम रखना उठना, इससे पच्चक्खाण भंग नहीं होता।

सासित्थेणवा :- सित्थ सहित वह अन्नादि दाने का स्वाद बिना का धोवण तथा दाथरादिक धोवण उसे छान कर पीये तो पच्चक्खाण भंग नहीं होता।

५. खाजा से कडाही भर गई हो तो उससे दूसरा खाजा निवियाता होता है, पर उसमे दूसरा घी नहीं डालना चाहिए उसी में पकाये वह (२) एक के बाद एक उस तरह तीन घान निकालकर उसी घी मे चौथा घान निकाले वह निवियता (३) गुड़ धानी गुडपापडी इत्यादि (४) पानी, गुड और घी मिल कर उबालें और उसमें दरदरा आटा डाल कर पकायी गई लापसी वह निवियाता (५) घी तेल से चुपडे हुए तवे पर बनाये गये पुडला इत्यादि। इसके भी भेदांतर से बहुत भेद होते हैं।